e-ISSN:2582-7219

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

Volume 7, Issue 1, January 2024

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 7.521

6381 907 438 6381 907 438 ijmrset@gmail.com www.ijmrset.com

International Journal Of Multidisciplinary Research In Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 7, Issue 1, January 2024 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2024.0701023 |

प्रगतिवादी हिन्दी साहित्य में मार्क्सवादी चेतना : एक अध्ययन

अमिता जैन

सह आचार्य, हिंदी साहित्य

चौधरी बल्लू राम गोदारा राजकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, श्रीगंगानगर

सारांश

प्रगतिवादी हिन्दी साहित्य आधुनिक हिन्दी साहित्य की एक महत्वपूर्ण धारा है, जिसमें समाज के शोषित, पीड़ित, किसान, मजदूर और निम्न वर्ग के जीवन को प्रमुखता से अभिव्यक्त किया गया है। इस साहित्यिक धारा पर मार्क्सवादी विचारधारा का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। मार्क्सवाद समाज में व्याप्त वर्ग-भेद, आर्थिक असमानता, शोषण, पूंजीवादी व्यवस्था और श्रम के महत्व को केंद्र में रखकर सामाजिक परिवर्तन की बात करता है। प्रगतिवादी हिन्दी साहित्य ने भी साहित्य को केवल मनोरंजन या सौंदर्य-बोध का माध्यम न मानकर सामाजिक जागरण और परिवर्तन का साधन माना। प्रस्तुत शोध-पत्र में प्रगतिवादी हिन्दी साहित्य में मार्क्सवादी चेतना के स्वरूप, उद्देश्य और प्रभाव का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि प्रगतिवादी लेखकों और कवियों ने अपने साहित्य में किस प्रकार वर्ग-संघर्ष, आर्थिक विषमता, श्रमिक जीवन, किसान समस्या, सामाजिक अन्याय और शोषण के विरुद्ध चेतना को अभिव्यक्त किया। प्रेमचंद, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, त्रिलोचन, रामविलास शर्मा, मुक्तिबोध और यशपाल जैसे साहित्यकारों ने अपने लेखन के माध्यम से समाज के वास्तविक जीवन को सामने रखा और साहित्य को जन-संघर्षों से जोड़ने का कार्य किया। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि प्रगतिवादी हिन्दी साहित्य में मार्क्सवादी चेतना केवल राजनीतिक विचारधारा के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, समानता और मानव-मुक्ति की व्यापक भावना के रूप में प्रकट होती है। यह साहित्य शोषित वर्गों की पीड़ा को स्वर देता है और समाज में परिवर्तन की आवश्यकता पर बल देता है। इस प्रकार प्रगतिवादी हिन्दी साहित्य मार्क्सवादी दृष्टि से जनवादी, यथार्थवादी और परिवर्तनशील चेतना का प्रतिनिधित्व करता है।

कुंजी शब्द: प्रगतिवादी साहित्य, मार्क्सवाद, वर्ग-संघर्ष, सामाजिक यथार्थ, किसान-मजदूर जीवन

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 7, Issue 1, January 2024 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2024.0701023 |

प्रस्तावना :

हिन्दी साहित्य में प्रगतिवाद एक ऐसी साहित्यिक धारा के रूप में उभरता है, जिसने साहित्य को समाज के सामान्य मनुष्य के जीवन से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य किया। इससे पहले साहित्य में कल्पना, भावुकता, सौंदर्य और व्यक्तिगत अनुभूतियों को अधिक महत्व दिया जाता था, लेकिन प्रगतिवादी साहित्य ने जीवन की वास्तविक परिस्थितियों, सामाजिक संघर्षों और आम जनता की समस्याओं को साहित्य का मुख्य आधार बनाया। इस धारा ने यह स्पष्ट किया कि साहित्य केवल मन की भावनाओं की अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि वह समाज को दिशा देने और अन्याय के विरुद्ध चेतना उत्पन्न करने का माध्यम भी है। प्रगतिवादी साहित्य का विकास उस समय हुआ जब भारतीय समाज अनेक प्रकार की समस्याओं से गुजर रहा था। देश पर अंग्रेजी शासन था, समाज में आर्थिक असमानता बढ़ रही थी, किसानों और मजदूरों का शोषण हो रहा था तथा निम्न वर्ग जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं के लिए संघर्ष कर रहा था। एक ओर सामंती व्यवस्था और पूंजीवादी प्रवृत्तियाँ समाज में भेदभाव को बढ़ा रही थीं, वहीं दूसरी ओर स्वतंत्रता आंदोलन ने जनता में अधिकार, समानता और न्याय की भावना को मजबूत किया। ऐसी परिस्थिति में साहित्यकारों ने समाज की सच्चाई को समझते हुए अपने लेखन को जनजीवन से जोड़ा। मार्क्सवादी विचारधारा ने प्रगतिवादी साहित्य को वैचारिक आधार प्रदान किया। मार्क्सवाद समाज को आर्थिक आधार पर समझने का प्रयास करता है और यह बताता है कि समाज में वर्गों के बीच संघर्ष का मुख्य कारण उत्पादन-साधनों पर नियंत्रण और आर्थिक असमानता है। इस विचारधारा के अनुसार समाज में शोषक और शोषित वर्गों के बीच लगातार संघर्ष चलता रहता है। प्रगतिवादी हिन्दी साहित्य ने इसी वर्गीय दृष्टि को अपनाते हुए किसान, मजदूर, निर्धन, स्त्री और वंचित वर्गों की पीड़ा, संघर्ष और आशाओं को साहित्य में स्थान दिया।

हिन्दी के प्रगतिवादी साहित्यकारों ने समाज की वास्तविक समस्याओं को बिना किसी कृत्रिमता के प्रस्तुत किया। उन्होंने गरीबी, भूख, बेरोजगारी, अन्याय, शोषण, सामाजिक भेदभाव और वर्गीय विषमता को अपने साहित्य का विषय बनाया। प्रेमचंद के कथा-साहित्य में किसान जीवन, श्रमिक वर्ग और ग्रामीण समाज की समस्याएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। इसी प्रकार नागार्जुन, त्रिलोचन, केदारनाथ अग्रवाल, मुक्तिबोध, यशपाल और अन्य रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया। प्रगतिवादी साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता इसकी जनपक्षधरता है। यह साहित्य समाज के शक्तिशाली और सुविधा-सम्पन्न वर्ग की अपेक्षा उन लोगों के पक्ष में खड़ा दिखाई देता है, जिन्हें लंबे समय से शोषण और उपेक्षा का सामना करना पड़ा है। इसमें किसान के श्रम, मजदूर के संघर्ष, स्त्री

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 7, Issue 1, January 2024 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2024.0701023 |

की पीड़ा, गरीब की विवशता और आम आदमी की आशाओं को अभिव्यक्ति मिली है। इस दृष्टि से प्रगतिवादी हिन्दी साहित्य केवल साहित्यिक आंदोलन नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना का व्यापक रूप है।

शोध के उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. प्रगतिवादी हिन्दी साहित्य में मार्क्सवादी चेतना के स्वरूप को समझना।
2. प्रगतिवादी साहित्य में वर्ग-संघर्ष, आर्थिक असमानता और शोषण के चित्रण का अध्ययन करना।
3. किसान, मजदूर और वंचित वर्गों के जीवन-संघर्ष को प्रगतिवादी साहित्य के संदर्भ में स्पष्ट करना।
4. प्रगतिवादी हिन्दी साहित्य में सामाजिक परिवर्तन, समानता और जनचेतना के महत्व को रेखांकित करना।

शोध पद्धति :

इस अध्ययन में प्रगतिवादी हिन्दी साहित्य में मार्क्सवादी चेतना के स्वरूप को समझने का प्रयास किया गया है। इसके लिए प्रगतिवादी साहित्य की प्रमुख रचनाओं, लेखकों और आलोचनात्मक सामग्री का अध्ययन किया गया है। इस शोध में मुख्य रूप से द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। द्वितीयक स्रोतों के अंतर्गत पुस्तकें, शोध-पत्र, आलोचनात्मक लेख, पत्र-पत्रिकाएँ और इंटरनेट पर उपलब्ध विश्वसनीय सामग्री को आधार बनाया गया है। अध्ययन के दौरान प्रगतिवादी साहित्य में वर्ग-संघर्ष, आर्थिक असमानता, शोषण, किसान-मजदूर जीवन और सामाजिक परिवर्तन से संबंधित विचारों का विश्लेषण किया गया है।

प्रगतिवादी हिन्दी साहित्य और मार्क्सवादी दृष्टि :

प्रगतिवादी हिन्दी साहित्य का विकास भारतीय समाज की वास्तविक परिस्थितियों से जुड़कर हुआ। यह साहित्य ऐसी धारा के रूप में सामने आया, जिसने साहित्य को जनजीवन, सामाजिक यथार्थ और परिवर्तन की भावना से जोड़ा। प्रगतिवादी साहित्यकारों ने यह माना कि साहित्य केवल कल्पना या मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि समाज की समस्याओं को सामने लाने और जनचेतना जगाने का माध्यम भी है। मार्क्सवादी दृष्टि ने इस साहित्य को मजबूत वैचारिक आधार प्रदान किया। मार्क्सवाद समाज में आर्थिक असमानता, वर्ग-भेद और शोषण को सामाजिक समस्याओं का मूल कारण मानता है।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|
| Volume 7, Issue 1, January 2024 |
| DOI:10.15680/IJMRSET.2024.0701023 |

इसी कारण प्रगतिवादी साहित्य में गरीब, किसान, मजदूर और वंचित वर्गों के जीवन को विशेष महत्व दिया गया। इस साहित्य में समाज को केवल बाहरी रूप में नहीं, बल्कि उसके आर्थिक और वर्गीय संबंधों के आधार पर समझने का प्रयास किया गया। प्रगतिवादी लेखकों ने सामंती व्यवस्था, पूंजीवादी शोषण और सामाजिक विषमता का विरोध किया। उन्होंने साहित्य के माध्यम से यह संदेश दिया कि समाज में न्याय, समानता और मानवीय गरिमा की स्थापना आवश्यक है। इस प्रकार प्रगतिवादी हिन्दी साहित्य में मार्क्सवादी चेतना सामाजिक यथार्थ, जनपक्षधरता और परिवर्तन की आकांक्षा के रूप में स्पष्ट दिखाई देती है।

वर्ग-संघर्ष और आर्थिक असमानता का चित्रण :

प्रगतिवादी हिन्दी साहित्य में वर्ग-संघर्ष और आर्थिक असमानता का चित्रण प्रमुख रूप से मिलता है। समाज में एक ओर संपन्न, सामंती और पूंजीवादी वर्ग है, जिसके पास धन, सत्ता और संसाधनों पर अधिकार है, वहीं दूसरी ओर किसान, मजदूर और गरीब वर्ग है, जो अपने श्रम के बावजूद अभावों में जीवन बिताता है। प्रगतिवादी साहित्यकारों ने इसी असमान व्यवस्था को अपनी रचनाओं का आधार बनाया। उन्होंने दिखाया कि समाज में मेहनत करने वाला वर्ग ही सबसे अधिक शोषित रहता है, जबकि श्रम का लाभ शक्तिशाली वर्ग प्राप्त करता है। यह स्थिति मार्क्सवादी विचारधारा के वर्ग-संघर्ष के सिद्धांत से जुड़ी हुई है। प्रगतिवादी साहित्य में जमींदार और किसान, मालिक और मजदूर, पूंजीपति और श्रमिक के बीच के संबंधों को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह साहित्य आर्थिक विषमता को केवल व्यक्तिगत गरीबी नहीं मानता, बल्कि सामाजिक व्यवस्था की समस्या के रूप में देखता है। प्रेमचंद के कथा-साहित्य में किसान के शोषण और आर्थिक विवशता का प्रभावशाली चित्रण मिलता है। इसी प्रकार अन्य प्रगतिवादी रचनाकारों ने भी समाज के कमजोर वर्गों की पीड़ा और संघर्ष को अभिव्यक्ति दी। इस दृष्टि से प्रगतिवादी साहित्य वर्गीय अन्याय के विरुद्ध चेतना उत्पन्न करता है।

किसान-मजदूर जीवन और शोषित वर्ग की पीड़ा :

प्रगतिवादी हिन्दी साहित्य में किसान और मजदूर जीवन का चित्रण अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस साहित्य ने उन वर्गों को केंद्र में रखा, जिन्हें लंबे समय तक साहित्य और समाज दोनों में उपेक्षित रखा गया था। किसान अन्न पैदा करता है, लेकिन स्वयं गरीबी, कर्ज, भूख और शोषण का सामना करता है। मजदूर समाज के निर्माण में अपना श्रम देता है, परंतु उसे उचित मजदूरी, सम्मान और सुरक्षा नहीं मिलती। प्रगतिवादी साहित्यकारों ने किसान-मजदूर वर्ग की इसी पीड़ा को संवेदनशील और यथार्थ

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 7, Issue 1, January 2024 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2024.0701023 |

रूप में प्रस्तुत किया। इस साहित्य में शोषित वर्ग को केवल दया का पात्र नहीं बनाया गया, बल्कि उसे संघर्षशील और परिवर्तन की शक्ति के रूप में देखा गया। प्रेमचंद के साहित्य में ग्रामीण किसान की समस्याएँ, कर्ज, जमींदारी शोषण और सामाजिक मजबूरियाँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। नागार्जुन, त्रिलोचन और केदारनाथ अग्रवाल जैसे कवियों ने अपनी कविताओं में खेत, श्रम, भूख, संघर्ष और जनजीवन को प्रभावशाली रूप में व्यक्त किया। यह चित्रण मार्क्सवादी चेतना से जुड़ा हुआ है, क्योंकि इसमें श्रम के महत्व और श्रमिक वर्ग की स्थिति को प्रमुखता दी गई है। प्रगतिवादी साहित्य किसान-मजदूर वर्ग की पीड़ा को समाज की केंद्रीय समस्या के रूप में प्रस्तुत करता है और उनके अधिकारों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करता है।

सामाजिक परिवर्तन, समानता और जनचेतना :

प्रगतिवादी हिन्दी साहित्य केवल समाज की समस्याओं का वर्णन नहीं करता, बल्कि उनके समाधान की दिशा में सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता पर भी बल देता है। इस साहित्य का उद्देश्य अन्याय, शोषण, असमानता और वर्ग-भेद के विरुद्ध जनचेतना पैदा करना है। मार्क्सवादी विचारधारा भी शोषण-मुक्त और समानतापूर्ण समाज की कल्पना करती है। इसी कारण प्रगतिवादी साहित्य में सामाजिक न्याय, समानता और मानवीय स्वतंत्रता की भावना बार-बार दिखाई देती है। यह साहित्य आम जनता को अपनी स्थिति समझने और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने की प्रेरणा देता है। प्रगतिवादी रचनाकारों ने यह दिखाया कि समाज में परिवर्तन केवल ऊपर से नहीं आता, बल्कि जनता की चेतना, संघर्ष और सामूहिक प्रयास से संभव होता है। इस साहित्य में किसान, मजदूर, स्त्री और वंचित वर्गों की आवाज को महत्व दिया गया है। यह वर्गों के बीच मौजूद असमानता को समाप्त करने और समाज में बराबरी स्थापित करने की बात करता है। प्रगतिवादी साहित्य की यही विशेषता उसे जनवादी और परिवर्तनशील बनाती है। इस प्रकार यह साहित्य सामाजिक चेतना को मजबूत करता है और मनुष्य को अन्याय के विरुद्ध खड़े होने की प्रेरणा देता है।

प्रमुख प्रगतिवादी साहित्यकारों का योगदान :

प्रगतिवादी हिन्दी साहित्य के विकास में अनेक साहित्यकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन साहित्यकारों ने अपने लेखन के माध्यम से समाज के शोषित, पीड़ित और संघर्षशील वर्गों की आवाज को अभिव्यक्ति दी। प्रेमचंद को हिन्दी कथा-साहित्य में सामाजिक यथार्थ और किसान जीवन के सशक्त चित्रण के लिए विशेष रूप से याद किया जाता है। उनकी

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 7, Issue 1, January 2024 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2024.0701023 |

रचनाओं में ग्रामीण समाज, कर्ज, जमींदारी शोषण, गरीबी और वर्गीय असमानता का स्पष्ट चित्रण मिलता है। नागार्जुन की कविताओं में जनजीवन, किसान-मजदूर संघर्ष और सत्ता-विरोधी चेतना प्रभावशाली रूप में दिखाई देती है। केदारनाथ अग्रवाल ने श्रम, प्रकृति और आम आदमी के जीवन को अपनी कविता का आधार बनाया। त्रिलोचन की कविताओं में ग्रामीण समाज, लोकजीवन और संघर्षशील मनुष्य की छवि मिलती है। मुक्तिबोध ने मध्यवर्गीय चेतना, सामाजिक अन्याय और वैचारिक संघर्ष को गहराई से प्रस्तुत किया। यशपाल ने अपने कथा-साहित्य में सामाजिक परिवर्तन, समानता और प्रगतिशील विचारों को महत्व दिया। इन सभी साहित्यकारों की रचनाओं में मार्क्सवादी चेतना प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से दिखाई देती है। इन्होंने साहित्य को जनजीवन से जोड़ा और उसे सामाजिक परिवर्तन का साधन बनाया।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत शोध-पत्र के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि प्रगतिवादी हिन्दी साहित्य में मार्क्सवादी चेतना का महत्वपूर्ण स्थान है। यह चेतना केवल किसी राजनीतिक विचारधारा तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज में व्याप्त आर्थिक असमानता, वर्ग-भेद, शोषण और अन्याय के विरुद्ध जागरूकता के रूप में दिखाई देती है। प्रगतिवादी साहित्य ने साहित्य को समाज के वास्तविक जीवन से जोड़ा और आम जनता की समस्याओं को साहित्य का मुख्य विषय बनाया। अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि प्रगतिवादी हिन्दी साहित्य ने किसान, मजदूर, गरीब और वंचित वर्गों के जीवन-संघर्ष को प्रभावशाली रूप से अभिव्यक्त किया। इस साहित्य में शोषित वर्ग की पीड़ा को केवल करुणा के रूप में नहीं दिखाया गया, बल्कि उसे संघर्ष और परिवर्तन की शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यही कारण है कि प्रगतिवादी साहित्य जनपक्षधर साहित्य के रूप में पहचाना जाता है। प्रगतिवादी साहित्यकारों ने वर्ग-संघर्ष, आर्थिक विषमता, सामंती शोषण और पूंजीवादी व्यवस्था की आलोचना करते हुए समाज में समानता और न्याय की आवश्यकता पर बल दिया। प्रेमचंद, नागार्जुन, त्रिलोचन, केदारनाथ अग्रवाल, मुक्तिबोध और यशपाल जैसे साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से आम आदमी के जीवन, श्रम, संघर्ष और अधिकारों को साहित्य के केंद्र में रखा। इनकी रचनाएँ यह संदेश देती हैं कि साहित्य का संबंध केवल सौंदर्य और कल्पना से नहीं, बल्कि समाज की सच्चाइयों और जनजीवन से भी होना चाहिए। इस शोध-पत्र से यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रगतिवादी हिन्दी साहित्य में मार्क्सवादी चेतना सामाजिक परिवर्तन, समानता, न्याय और मानवीय मुक्ति की भावना के रूप में उपस्थित है। यह साहित्य शोषण-मुक्त समाज की कल्पना करता है और पाठक को सामाजिक अन्याय के प्रति जागरूक बनाता है। वर्तमान समय में भी जब समाज में आर्थिक असमानता, बेरोजगारी, श्रमिक समस्याएँ और सामाजिक विषमता

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 7, Issue 1, January 2024 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2024.0701023 |

विद्यमान हैं, तब प्रगतिवादी साहित्य की प्रासंगिकता बनी हुई है। अतः कहा जा सकता है कि प्रगतिवादी हिन्दी साहित्य ने हिन्दी साहित्य को जनजीवन से जोड़ने, शोषित वर्गों की आवाज को सामने लाने और समाज परिवर्तन की चेतना विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मार्क्सवादी दृष्टि ने इस साहित्य को वैचारिक गहराई प्रदान की और उसे जनवादी स्वर दिया। इस प्रकार प्रगतिवादी हिन्दी साहित्य मार्क्सवादी चेतना के आधार पर सामाजिक यथार्थ, वर्गीय संघर्ष और मानवीय समानता का सशक्त साहित्यिक रूप प्रस्तुत करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. शर्मा, रामविलास. मार्क्सवाद और प्रगतिशील साहित्य. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. शर्मा, रामविलास. प्रेमचंद और उनका युग. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. सिंह, नामवर. इतिहास और आलोचना. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. शुक्ल, रामचंद्र. हिन्दी साहित्य का इतिहास. नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
5. द्विवेदी, हजारीप्रसाद. हिन्दी साहित्य की भूमिका. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. सिंह, बच्चन. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास. राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. प्रेमचंद. गोदान. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. मुक्तिबोध, गजानन माधव. चाँद का मुँह टेढ़ा है. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
9. नागार्जुन. नागार्जुन रचनावली. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
10. मार्क्स, कार्ल एवं एंगेल्स, फ्रेडरिक. कम्युनिस्ट घोषणापत्र. पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

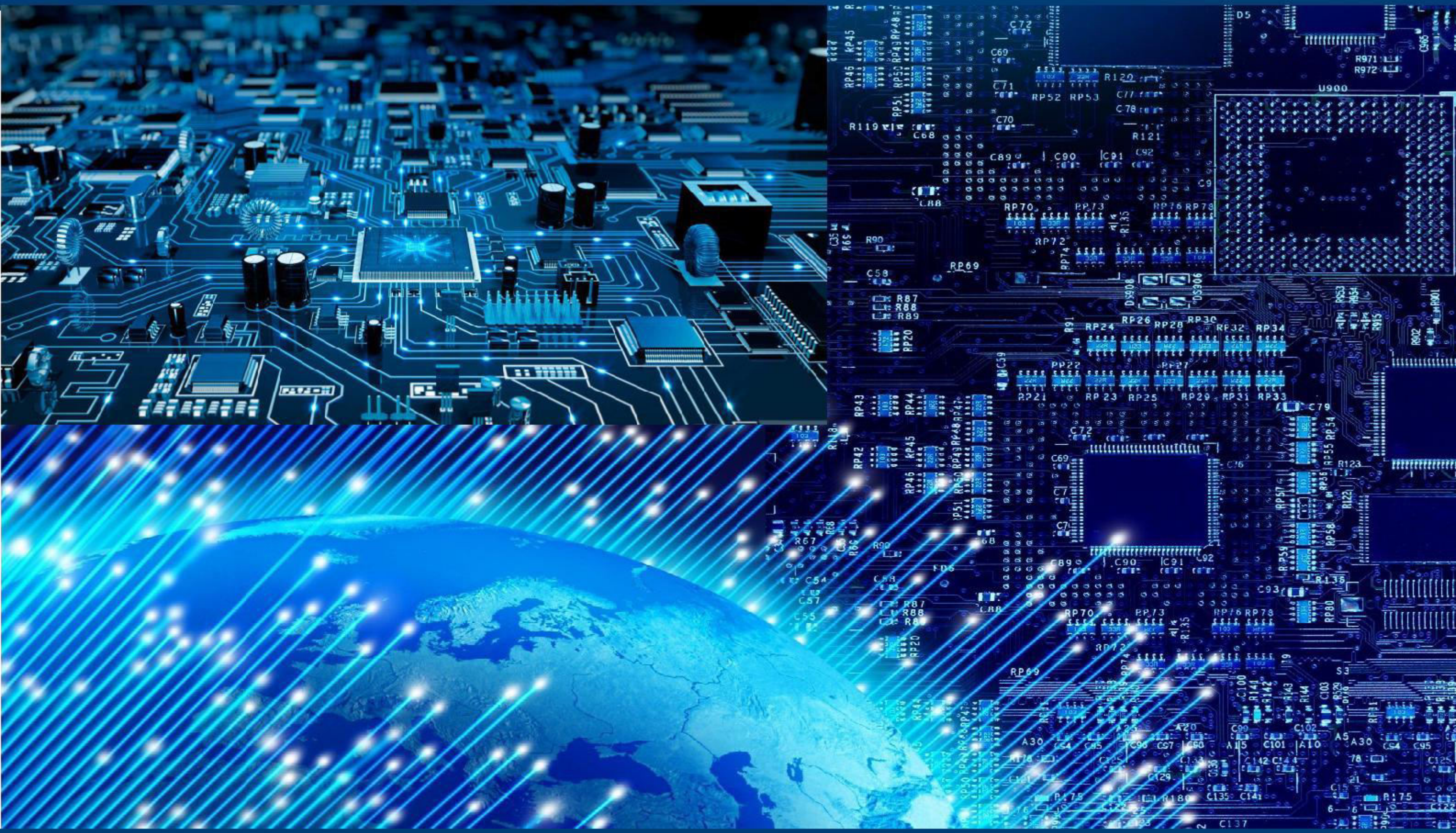

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर
NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF
MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

| Mobile No: +91-6381907438 | Whatsapp: +91-6381907438 | ijmrset@gmail.com |

www.ijmrset.com